RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. II, Issue 2 and 3, March and September 2017

असहयोग आंदोलन में महिलाओं का योगदान : छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में

बन्सो नुरूटी*
इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छग).

शोध सारांश

घर–परिवार, समाज और राष्ट्र की समग्र–चेतना एवं स्वरूप को प्रभावित करने वाली महिला का आभास समाज में उसके स्थान समाज व राष्ट्र निर्माण के कार्य में उसकी सक्रिय सहभागिता पर निर्भर करता रहा है। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई थी। महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन–आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उनके द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में जनता के हर वर्ग ने भाग लिया तथा इस आंदोलन ने भारतीय महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न की। गाँधी जी के पुकार पर हजारों महिलाओं ने इस आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने जुलुसों का नेतृत्व किया, विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरने दिये तथा गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाया। 1919 ई. के पूर्व गाँधी जी ने महिलाओं को राजनीति में आने के लिये प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप सीमित संख्या में ही सही महिलाओं ने इस आंदोलन में भाग लिया।

छत्तीसगढ़ में महिला जागरण का कार्य पुरुष व महिलाओं दोनों ने ही समान रूप से किया। छत्तीसगढ़ के धमतरी तहसील की महिलाएँ संगठित होकर प्रभातफेरी टोली बनाकर जन जागृति का कार्य पुरुषों की भाँति करने लगीं तथा वे घर–घर जाकर खादी वस्त्र के उपयोग के प्रचार–प्रसार प्रारंभ किया।

कुंजी शब्द : राष्ट्रीय आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सत्यग्रह, महिला सशक्तीकरण

भूमिका

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास स्वाधीनता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अद्भुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरुष वर्ग एवं महिला वर्ग दोनों ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वाधीनता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 की क्रांति, वर्षों की छटपटाहट एक विस्फोट के रूप में हमारे सामने आई, जिसकी नायिका एक महिला थी, जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम का परिचय दिया।[1] जिसके साहस व वीरता के बारे में स्वयं अंग्रेज शासक सर ह्यूरोज ने प्रशंसा करते हुए कहा है कि "सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं।" रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई लोधी ने जहाँ रणभूमि में अपने पराक्रम और शौर्य का प्रदर्शन कर वीर गति प्राप्त की, वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाय नेपाल चली गयी।[2]

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई जिसने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। 1890 ई. के कांग्रेस के कलकत्ता वार्षिक अधिवेशन में स्वर्ण कुमारी देवी और श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती कादम्बिनी गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया।[3] यह भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश का शुभारंभ था और इसके बाद मातृभूमि की रक्षा करने हेतु राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या में लगातार वृद्धि होती गयी।

इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हें संगठित कर एक लक्ष्य दिया महात्मा गाँधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन चलाकर। इससे महिलाओं को न केवल एक उद्देश्य मिला अपितु उन्हें एक नयी दिशा भी मिली। कस्तूरबा गाँधी, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, मणिबेन पटेल, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, पार्वती देवी, सरला देवी साराभाई, नलिनी सेन गुप्त, लाडो रानी जुत्शी, खुर्शीद नौरोजी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, सुचिता कृपलानी, जानकी देवी बजाज, दुर्गा बाई देशमुख, मनमोहिनी सहगल, उशा मेहता, सुभद्र जोशी, डॉ. सुशीला नैय्यर, मीराबेन, अनसुइया बाई, रामेश्वरी नेहरू, सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय आंदोलन की कुछ प्रमुख महिला विभूतियाँ हैं जिन्होंने गाँधी जी की प्रेरणा से स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया।[4]

*Corresponding Author: Email: bansonuruti@gmail.com • Mobile No. 09755953190

जिस समय सम्पूर्ण भारत स्वाधीनता के प्रवाह में बह रहा था, छत्तीसगढ़ उससे कैसे अछूता रहता? छत्तीसगढ़ में भी राष्ट्रीयता की भावना का उदय एवं विकास हुआ। गॉधी जी के छत्तीसगढ़ आगमन के साथ ही यह क्षेत्र राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जुड़ गया और कालान्तर में गाँधीवादी आंदोलनों में महिलाओं ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गाँधीवादी दर्शन ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र के जनमानस को गहराई से प्रभावित किया। गाँधीवादी विचारधारा इस क्षेत्र की भोली–भाली और शांतिप्रिय जनता के विचारों के काफी अनुकूल थी। यही कारण है कि इस क्षेत्र में गाँधी जी अत्यन्त लोकप्रिय और सफल रहे उनके नेतृत्व में पुरुषों के साथ–साथ शहरी और ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी अत्यन्त उत्साहवर्धक थी।[5]

राष्ट्रीय आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं की भागीदारी को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम–वे सामान्य महिलायें जिन्होंने सत्याग्रह में हिस्सा लिया, किन्तु किसी भी राजनीतिक, सामाजिक संगठन से औपचारिक रूप से संबंधित नहीं थीं। द्वितीय–वे महिलायें जो गॉधीवादी राजनीति से प्रभावित थीं। तृतीय–वे कुलीन परिवार की महिलायें जिनके परिवार राष्ट्रीय आंदोलन के लिये प्रतिबद्ध थे। इस कारण ऐसी महिलाओं का सार्वजनिक राजनीति में प्रवेश तथा भूमिका सरल एवं स्वाभाविक थी।[6]

भारत में महिला आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन की राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास स्वयं चुनौतीपूर्ण कार्य था। गाँधी जी ने इस संदर्भ में अनेक दूरगामी प्रयोग किये। उन्होंने सत्याग्रह में महिलाओं को केवल इस कारण भी प्राथमिकता नहीं दी कि वे उन्हें पुरुष से श्रेष्ठ समझते थे, अपितु इस कारण भी कि वे अनेक क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुष से श्रेष्ठ समझते थे। उनके अनुसार अहिंसक संघर्ष में महिलाएँ अपने धैर्य एवं सहिष्णुता के गुणों के कारण पुरुषों की अपेक्षा सत्याग्रह आंदोलन को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती थीं। उनके विचार में महिला को अबला कहना पुरुष की विकृत एवं संकीर्ण मानसिकता का परिचायक था। वे मानते थे कि महिलाओं में पुरुषों से अधिक नैतिक शक्ति है जो सभी शक्तियों से अधिक महत्वपूर्ण है।[7]

असहयोग आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों की तन–मन–धन से सहायता की थी। उनको यह विश्वास था, कि युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार उन्हें कुछ राजनीतिक अधिकार अवश्य प्रदान करेगी। परन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीयों को निराशा ही हाथ लगी। वास्तव में यह ब्रिटिश कूटनीति थी। इससे जनता में रोष व्याप्त हो गया। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध से भारतीयों की राष्ट्रीय चेतना में और अधिक वृद्धि हुई। भारतीय राजनीति और स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में 1918 का वर्ष नये युग का प्रतीक था। इसके पूर्व राष्ट्रीय आंदोलन केवल मध्यम शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था, परन्तु गाँधी युग का आरंभ होते ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का रूप बदल गया तथा इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया और अब यह जनता का आंदोलन बन गया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस जनता की संगठन बन गयी। सत्य और अहिंसा के मार्ग ने जनता में नया उत्साह व स्फूर्ति का संचार किया।[8]

महात्मा गाँधी ने एक सहयोगी के रूप में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया था। 1918 तक उनका ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता में पूरा विश्वास बना रहा परन्तु इसके बाद राजनीति में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं तथा कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुईं जिन्होंने एक सहयोगी गाँधी को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोगी गाँधी बना दिया। महात्मा गाँधी को असहयोगी बनाने के लिए कुछ विशेष घटनायें उत्तरदायी थीं जिनमें रौलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड, हंटर रिपोर्ट तथा खिलाफत आंदोलन इन सभी घटनाओं से सम्पूर्ण भारत की जनता के साथ–साथ गाँधी जी भी असंतुष्ट थे।[9] कांग्रेस की नयी नीति तथा कार्यक्रम के संबंध में निर्णय लेने के लिये सितम्बर 1920 में कलकत्ता में एक अधिवेशन किया गया, जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे। इसी अधिवेशन में महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन आरंभ करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।[10] प्रस्ताव के पक्ष में पंडित मोती लाल नेहरू, मौलाना शौकत अली तथा मोहम्मद अली थे। चितरंजन दास, मोहम्मद जिन्ना, श्रीमती एनी बेसेन्ट, तथा विपिनचन्द्र पाल जैसे नेताओं के विरोध के बावजूद भी यह प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकार किया गया था।[11]

दिसम्बर, 1920 में नागपुर में हुए कांग्रेस के नियमित पैंतीसवें ऐतिहासिक अधिवेशन में गाँधी जी के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। अधिवेशन में स्वागत समिति के अध्यक्ष जमना लाल बजाज, मंत्री डॉ. वी.एस. मुंजे, सचिव मोतीलाल नेहरू, एम.ए. अंसारी, सी. गोपालाचारी थे। इसके अलावा अन्य भाग लेने वालों में रायपुर के पं. रविशंकर शुक्ल, पं. सुन्दरलाल शर्मा, वामनराव लाखे, बैरिस्टर सी. एम ठक्कर, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, धमतरी से नारायण राव मेघावाले, नत्थूजी जगपात, बाबू छोटे लाल, नारायण राव दीक्षित तथा बिलासपुर से ई. राघवेन्द्र राव, ठाकुर छेदीलाल आदि प्रमुख थे। ये सभी नेता जब अधिवेशन से वापस क्षेत्र में आए तो उन्होंने असहयोग हेतु तय कार्यक्रमों का बड़ी तीव्रता से प्रचार आरंभ कर दिया।[12] इसके साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन एवं कांग्रेस पर महात्मा गाँधी का असाधारण प्रभाव स्थापित हो गया। आंदोलन को सफल बानने के लिये न केवल पुरुषों ने बल्कि महिलाओं ने भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया । गाँधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने का आह्वान किया जिसका उन्होंने अनुकूल प्रतिसाद दिया।[13]

असहयोग आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश शासन तंत्र को पूरी तरह ठप्प करना था। इसके लिये ब्रिटिश भारत की समस्त राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं के बहिष्कार का निश्चय किया गया। इस आंदोलन के मुख्य प्रस्ताव में गाँधी जी ने पूरे देश से आह्वान किया था, कि इस अहिंसात्मक आंदोलन को तब तक चलाया जाये जब तक खिलाफत संबंधी अन्याय दूर न हो जाये और स्वराज्य प्राप्त न हो जाये। आंदोलन का कार्यक्रम निम्नवत् था–

1. सरकारी उपाधियों एवं पदों का त्याग
2. सरकारी लगान न पटाना
3. अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना
4. स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
5. वकीलों द्वारा वकालत त्यागकर विदेशी अदालतों का बहिष्कार तथा राष्ट्रीय अदालतों व पंचायतों की स्थापना
6. कौंसिल का बहिष्कार व चुनावों का बहिष्कार
7. मद्य निषेध प्रचार व भारतीयों द्वारा मैसोपोटामिया में जाकर कार्य करने से इन्कार करना।[14]

गाँधी जी इन सभी निषेधात्मक कार्यों को पूर्णतया अहिंसात्मक रीति द्वारा करने का ध्यान बार–बार सबको दिलाते रहते थे, ताकि आंदोलन को पूर्णतया सफल बनाया जा सके। इस आंदोलन की सफलता के लिये गाँधी जी ने सारे देश का भ्रमण बड़े वेग के साथ करना शुरू किया। वे दिन–रात सभाओं में भाषण देते थे और लोगों से स्वयं मिलकर उन्हें असहयोग का वास्तविक अर्थ बताते थे तथा उन्हें अपने सप्त सूत्री कार्यक्रम को समझाते थे। वे लोगों को चरखा चलाने, खद्दर पहनने तथा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने की सलाह देते थे।[15]

असहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत महात्मा गाँधी, तिलक निधि एवं स्वराज निधि हेतु राशि एकत्रित करने अली बंधुओं के साथ 20 दिसम्बर 1920 को कलकत्ता से रायपुर आए। रायपुर की जनता ने बड़े उत्साह से उनका स्वागत किया। रायपुर में आज जो गाँधी चौक है, उस स्थान पर विशाल सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने तिलक निधि हेतु महिलाओं से धन एकत्रित किया।[16] तब से यह स्थान न केवल रायपुर बल्कि सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ की सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया।[17] गाँधी जी के छत्तीसगढ़ दौरे से इस क्षेत्र के लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा मिली। इस दौरे में महात्मा गाँधी ने धमतरी तहसील के विभिन्न स्थानों और रायपुर नगर की पूरी यात्रा की। छत्तीसगढ़ के सभी वर्गों के लोगों ने इस आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। प्रसन्नता का विषय यह था कि छत्तीसगढ़ की महिलायें जो इसके पहले घर की चारदीवारी से नहीं निकलती थीं, उन्होंने इस आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा स्वाधीनता के इस संग्राम में छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया।

रायपुर नगर में एक हरिजनोद्धार का कार्यक्रम चलाया गया जिसमें श्रीमती केतकी बाई, श्रीमती फुलकुँवर, श्रीमती रोहणी बाई तथा श्रीमती जमुनाबाई आदि सम्मिलित थीं। इन समस्त महिलाओं ने नारी जागृति लाने हेतु रायपुर के देवालयों को सत्याग्रह प्रेरणा स्थल में बदल दिया। महंत लक्ष्मीनारायण दास का पुरानी बस्ती स्थित जैतुसाव मठ सत्याग्रह का सबसे बड़ा प्रेरणा स्थल था, जहाँ एकादशी महात्म्य सुनने आयीं बहनें देश की स्थिति पर विचार करती थीं। महंत लक्ष्मीनारायण दास की वृद्ध माँ पार्वती बाई सत्याग्रही महिलाओं को आशीर्वाद देकर जुलूस में भेजती थीं, जिसका नेतृत्व श्रीमती अंजनी बाई, रजनी बाई, फुलकुँवर बाई श्रीवास्तव और जानकी बाई पाण्डे कर रही थीं। सत्याग्रह का दूसरा केन्द्र बूढ़ापारा स्थित वामनराव लाखे का बाड़ा था। इसकी नेत्री पं. रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी देवी शुक्ल थीं। सत्याग्रह का तीसरा स्थान कमासी पारा स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर था जिसकी नेत्री श्रीमती रूक्मणी बाई तिवारी थीं। सत्याग्रह का चौथा मकान तात्यापारा स्थित राधाबाई का मकान था जिसका नेतृत्व राधाबाई, पार्वती बाई और केतकी बाई कर रही थीं। वे हर मोहल्ले में बैठक लेकर जन–जागरण करने का प्रयास करती थीं।[18]

पं. रविशंकर शुक्ल की भांजी प्रकाशवती मिश्र भी समय–समय पर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेती रहीं और नारी जागरण संबंधित विभिन्न संगठनों में अहम् भूमिका निभायी। पं. रविशंकर शुक्ल की पत्नी भवानी देवी भी नगर की महिलाओं में राजनैतिक जागरण लाने का कार्य करती थीं। बस्तर की शासिका स्व. प्रफुल्ल कुमारी देवी छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्वाधीनता आंदोलन के दौरान प्रथम महिला शासिका थीं जिन्हें अंग्रेजी हुकुमत को मान्यता देनी पड़ी।[19]

असहयोग आंदोलन में जब गाँधी जी ने चरखे और खादी कार्यक्रम को आरंभ किया तो जालंधर स्थित कन्या महाविद्यालय की छात्राएँ चरखा कातने लगीं। 1920–1921 के असहयोग आंदोलन में कन्याओं की एकमात्र यही संस्था थी जिसने आंदोलन में भाग लिया।[20]

छत्तीसगढ़ में भी महिलाओं ने स्वदेशी कार्यक्रम एवं विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार को प्राथमिकता दी। तकली और चरखा स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख अस्त्र थे। 8–15 अक्टूबर 1921 तक रायपुर में खादी सप्ताह मनाया गया। इसके अंतर्गत रावन भाटा में एक विशाल खादी

प्रदर्शनी का आयोजन श्रीमती अंजुम ने किया था, जिन्होंने 200 महिला स्वयं सेविकाओं का संगठन तैयार किया। यह गाँधी जी के नेतृत्व का ही परिणाम था कि घर की चारदीवारी में रहने वाली महिलाएँ सार्वजनिक रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने बाहर पहुँची।[21]

15 अक्टूबर 1921 को प्रदर्शनी स्थल पर सूत कातने की प्रतियोगिता हुई जिसमें लगभग 100 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। नयापारा वार्ड के जगन्नाथ एवं उनकी पत्नी सूत कातने में इतने निपुण थे कि उन्हें देखने के लिये भीड़ लगी रहती थी। प्रदर्शनी में भाग लेने वाली मुस्लिम तथा हिन्दू महिलाओं की संख्या लगभग समान थी। वामनराव लाखे, पं. रविशंकर शुक्ल, भोलानाथ रिछारिया, गोविंद लाल पुरोहित, सेठ आत्मदत्त आदि ने प्रदर्शनी को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दिया।[22] धमतरी तहसील में छोटेलाल बाबू के द्वारा खादी उत्पादन केन्द्र प्रारंभ किया गया, जिसमें गाँवों की वृद्ध महिलाओं ने सूत कातकर सहयोग दिया।[23] विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के दौरान कीका भाई की दुकान पर पिकेटिंग की गयी, क्योंकि विदेशी वस्तुओं का विक्रय असहयोग आंदोलन के दौरान भी यहाँ पर होता था। राधाबाई, रोहिणी बाई परगनिया, भवानी देवी शुक्ल, प्रकाशवती मिश्र आदि महिलाओं द्वारा अन्य महिलाओं को भी पिकेटिंग के लिए प्रेरित किया गया।

असहयोग आन्दोलन के दौरान अनेक वरिष्ठ नेताओं का इस क्षेत्र में आगमन हुआ और उन्होंने अपने भाषणों में लोगों को इस आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार हुआ बड़ी संख्या में विद्यार्थी अध्ययन छोड़कर इस आन्दोलन से जुड़ गये । 1 फरवरी 1921 में पं. सुन्दरलाल शर्मा के आह्वान पर बुनियादी प्रशिक्षण संस्था के 53 प्रशिक्षुओं ने संस्था को त्याग कर असहयोग आन्दोलन में भाग लिया।[24]

असहयोग आन्दोलन में रायपुर नगर की अनेक महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया। उन्होंने जुलुस निकाले, धरने दिये तथा गिरफ्तारी दी। इन महिलाओं में श्रीमती भागीरथी बाई तथा श्रीमती रुक्मणी बाई के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। रायपुर के जोरा पारा गांव के निवासी महावीर प्रसाद तिवारी की पत्नी श्रीमती भागीरथी बाई ने स्वतंत्रता के इस आंदोलन में भूमिगत रहकर सहयोग किया। वह स्वयं अनेक कष्ट झेलती गयीं। कई दिन उन्हें बिना भोजन–पानी के रहना पड़ा किन्तु फिर भी वह स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों की निरन्तर मदद करती रहीं। घर–घर जाकर महिलाओं को भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित करती रहीं।[25]

छत्तीसगढ़ की महिलाओं के अदम्य त्याग और उत्साह का एक और उदाहरण असहयोग आन्दोलन में देखने को मिला। जनवरी 1922 में रायपुर जिले के नगरी सिहावा क्षेत्र में जंगल सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। यह सत्याग्रह जंगल के उन अधिकारियों के विरुद्ध था जो आदिवासियों से बेगार लेते थे। इसके विरोध में नगरी सिहावा के समस्त आदिवासी पुरुष और महिलाओं ने एकजुट होकर ब्रिटिश सरकार का विरोध करना प्रारंभ किया। उनके विरोध को समाप्त करने के लिए उनके मकान लूट लिए गये तथा बर्तन तोड़ दिए गए, परन्तु वे अपनी बातों पर कायम रहे, यहाँ तक सरकारी अधिकारियों को नाई, धोबी, रसोइया मिलना तक बंद हो गया। अंततः अधिकारियों को झुकना पड़ा और वहाँ बेगार की प्रथा बंद कर दी गई।[26]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि असहयोग आन्दोलन में छत्तीसगढ़ क्षेत्र की शहरी और ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी अत्यंत उत्साहवर्धक थी। जहाँ एक ओर शहरी क्षेत्र की महिलायें जुलूस निकालने, खादी कार्यक्रम, विदेशी वस्त्रों की होली जलाने आदि कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लेती थीं, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने चरखा कातकर स्वदेशी कार्यक्रम में उत्साह से भाग लिया। नगरी सिहवा में तो आदिवासी महिलाओं ने सरकारी अधिकारियों का बहिष्कार कर अपने साहस का अद्भुत परिचय दिया था। इस प्रकार महात्मा गाँधीजी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लेकर महिला उत्थान तथा महिला सशक्तिकरण को सार्थक कर दिया।

संदर्भ सूची

1. गोस्वामी कुनाल, भारतीय महिलाएँ : विविध आयाम, सुमित एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली, 2012, पृ. 02.
2. माथुर, एल.पी., भारत का महिला स्वतंत्रता सेनानी, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2010, पृ. 21.
3. आनंद, सुगम, भारतीय इतिहास में नारी, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2007, पृ. 103.
4. गुप्त, विश्व प्रकाश एवं मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता संग्राम और महिलायें, 1999, पृ. 23.
5. वर्मा, भगवान सिंह, छत्तीसगढ़ का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी छ.ग. रायपुर, पृ. 181.
6. एग्न्यू विजय, वीमेन इन इण्डियन पॉलिटिक्स, नई दिल्ली, 1979, पृ. 08.
7. गाँधी, एम.के., वीमेन्स रोल इन सोसायटी, अहमदाबाद, 1959, पृ. 8–9.
8. सिंह, बीरकेश्वर प्रसाद, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ. 274.

9. नागोरी, एस.एल. एवं कांता, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, जयपुर 2001, पृ. 128.
10. त्यागी, एम.पी. एवं आर.के. रस्तोगी, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, पृ. 70.
11. ठाकुर, एग्नेस, मध्यप्रांत एवं बरार में दलीय राजनीति तथा स्वाधीनता आंदोलन, पृ. 18.
12. सीक्रेट फाइल नं. 06, असहयोग आंदोलन, पृ. 15.
13. गौंड़, राज लक्ष्मी, नारी जागरण और गाँधी जी (लेख), मध्यप्रदेश संदेश, दिसम्बर 1971.
14. ग्रोवर, बी.एल. एवं यशपाल, भारतीय स्वतंत्रता सेग्राम तथा संवैधानिक विकास, पृ. 248.
15. चांदीवाला, बृजभूषण, महात्मा गाँधी जी की दिल्ली डायरी, पृ. 101.
16. मिश्र, पी.एल., द पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ दी सेन्ट्रल प्राविंसेस, पृ. 198.
17. शर्मा कमलाकांत, छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का परिचय, भाग–2, पृ. 07.
18. शर्मा, जे.पी., छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन, पृ. 78.
19. शर्मा, आलोक, संदर्भ छत्तीसगढ़, पृ. 28.
20. विद्यालंकार सत्यकेतु, आर्य समाज का इतिहास, खण्ड–03, पृ. 25.
21. ठाकुर, एग्नेस, पूर्वोक्त, पृ. 08.
22. ठाकुर, हरि, स्वाधीनता संग्राम में रायपुर नगर का योगदान, पृ. 46.
23. देवांगन, शोभाराम, धमतरी तहसील में स्वतंत्रता आंदोलन, पृ. 29.
24. वर्मा, भगवान सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 179.
25. सक्सेना, शालिनी, स्वाधीनता आंदोलन में मध्यप्रांत की महिलाएँ, पृ. 02.
26. देवांगन, शोभाराम, धमतरी तहसील में स्वतंत्रता आंदोलन, पृ. 34.